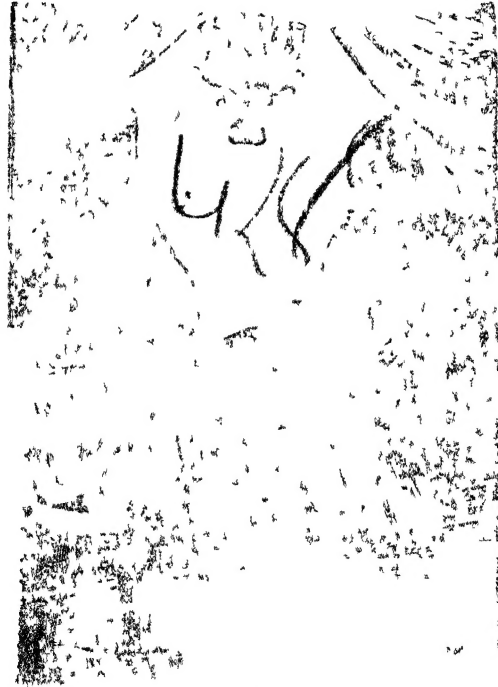


८५०३

આ રીડા આ શેડ

પિસાચિ-કા-આરીડ.



बालबोध हरफ उरदु जवान.

हदीये तुलमुल्लेमीन याने	सोरे मा तम	०-३-०
जरूरीयातेदीन ०-८-०	फरीयाद नामा	०-१-०
शहीदे कर बला ०-८-०	शादी नामा	०-१-०
होफेजुल इस्लाम ०-६-०	वफात नामा	०-१-०
जंगनामा जैतुन ०-४-०	मोलुद गुलजार	
इन्दरसभा बातसवीर ०-३-०	जमान	०-६-०
किस्सा लैला मजनू	पारे अम्मावतस	
बातसवीर ०-४-०	शाआलुन	०-३-०
अहेरे इदक बातसवीर ०-८-०	जोते जवाना	०-२-०
हुजुल इस्लाम ०-२-०	बहार जवाना	०-२-०
नुर नामा ०-२-०	नष्ट बहार जमान	०-२-०
शाहावत नामा ०-२-०	फिराके जाना	०-२-०
सखावत नामा ०-२-०	गुलसन बहार	०-२-०
सक्रान नामा ०-२-०	बहार गुलसन	०-२-०
कि. हलीमावाइका ०-२-०	किस्सा तोता मैना	१-०-०
	किस्सा हातम ताई	१-०-०

जरूरी इत्तला.

खरीददारों को कीताबें मगते वक़्त अपना पुरा पन्ना याने नाम-मुकाम-पोस्ट और उरदुमे हो या गुजराती या हिंदीमे हो या इंग्रजीमे हो साफ़ लीखना चाहिये खत साफ़ न लीखनेसे उस खतका माल या जवाब नहीं भेजा जाता है. और १ रु. से कम का बी. पी. किसी को भेजा नहीं जाता।

हुसेन मीरझां बुकसेलर ओर पब्लीशर

करी रोड मुंबई पोस्ट नं० १३

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાશિદ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૧૩૦૩ વર્ગીક

પુસ્તકનું નામ પિયા. ૨૧૩/ ૫. ૨૧૩

વિષય ૬૪૬૮:૩ ૪૬૮

पियारिका आशिक.

पहला भाग.

उलझतका नयन मज है डे हो वोली वेकरा ।
दोनों तरफ हो आग परापर लगी दुर्ग ॥

गाविजन कोश परसर जैसा न होगा जिसनें व्यद्वीगदका
नाम न सुनाहो, येदुशहर उन शहरों में शुमार कीया जाता
है जिन्होंने सौ परस के अन्दर ही तरकडी की है हम व्याज
नाजरीनका धरसी शहर की सैर कराना चाहते हैं धरदि एक
मोहल्ले में एक शान्दार भकान बनाहुवा है उसके एक
पहेलु में एक भरदाना कमरा बना हुआ है उसकी मौजुनी-
यत मदी शैकीन आवजहा होनेका सम्भूत दे रही है कमरे के
समानै वाले पराम्दा में यन्द अशपास की नशिस्त है
जिनकी शक्त व सूरत देखने सै मावूमहोता है के धनमें सै
किसी की उम्र बीस पाछिस साव सै न्यादां नहीं है अदके
जिस की तरफ मदी होने का शुमान होता है उसनें तो
अली अहद शपाय में कदम रण्णां है क्योंकि अली पूय

સુરત ચેહરે પર સખ્ખ બર આમદ હોના શુદ્ધરૂ હૂવા હૈ ઈસ તરહ ગુફતગૂ કા ખાખર ગર્મ હૈ ।

એક—રિયાજ હુસૈન સાહબ આજ શખ્કો આખ જલ્લીતશરીફ લેઆના જરા હરમોનિયમ સે તખીયત બહેલાઈયે તમામ દિન ઈસ્કૂલ કી મોખ્ખહત હી મેં ગુજરતા હૈ ॥

રિયાજ હુસૈન— બહોત અચ્છા મેં ખાના ખાકર ફૈરન હી આખજીંગા, હાં આજ કિતાબ વગૈરા તો કુછ દેખની હી નહીં હૈ મુઝકો બી કૈઈ દિન ગુજર ગએ હૈ રાત દિન કિતાબહી જરે નજરરહીહૈ આજ ખુદા ખુદા કરકૈ માસ્ટર સાહબનૈ ઈમતહન ખતમ કર દિયા ।

મુનવર અલી—(ત્રીસરે સાહબ) બાઈ હાં આજ જરૂર આહિયે, ચૂકી કિસી આકિલ કા કૌલ હૈ “રાગ રૂહ કી ગિજા હૈ” લિહાજ આજ દિમાગ કો અરામ મિલા હૈ જરા તકરીહ સૈ દુરસ્ત કરના આહિયે મગર ખલીલ અહમદ (પહલે સાહબ) આજ તો હમ રિયાજ હુસૈન સૈ કુછ જરૂર સુનેગે ચૂકિ બહોત દિન ગુજર ચુકે હૈ બસ વહી ગબલ સુના દેના ॥

દિલહમનૈ ઉસ સનમકોદિયા ફિરકિસી કો ક્યા) યેહ બહોત હી બલી માલૂમ હોતીહૈ તુમ્હારે મુહ સે ખલીલ અહમદ—હાં યેય ગબલ ગબલ કી.... (લપક કર દર્વાજે પર ખડા હોખતા હે)

રિયાજ હુસૈન—(દિલ થામે હુયે વાપિસ આતા દેખ કર ક્યાં ક્યા હૈ ! ડાન થા,

ખલીલ—કુછ નહીંઉક્ર (કહ કર દમથામ લેતા હૈ)

રિયાજ—(હંડતે હુયે) ક્યા હૈ, દેખું તૌ ક્યા હૈ (બાહર દેખતે હુયે) ફિર આપકો ક્યા વો બરહી હૈ કિસીકા રાસ્તા ખાન્દ કરતે હો

ખલીલ—અરે સાહબ ક્યો છેડતે હો વદલાહ તુમને દેખા નહીં સચ કહેતાહૂં “હાય ગજબ કરગઈ,, મેને તો ઈસ પરી શુમાઈલ કો આજહી દેખા હૈ ઈસ સે પેશતર કબી નહીં દેખા ન માલૂમ કમખખત ઉસ શોખ ચિતવન મેં ક્યા અસર થા દિલ ખીંચ કર ચલા ગયા અખ નમાલૂમ ઇસકા અંજામ ક્યા હોગા ॥

કદમ અખ ઈશક કે દરયા મેં ડાલા ॥

તવકુલત આલા અદલાહ તાંલા ।

મુનવ્વર અલી—ભાઈ હસીન તો ગજબ ડી હૈ વોહી સખ્જ સાડી વાલી હોગી, જીસકી સૂરતદેખ કર બેસાખ્તા વોહ શૈર જખાન સૈ નિકલ જતા હૈ

પુદાયા કેસી કેસી સૂરતેં તૂને બનાઈ હૈ ॥

કે હર સૂરત કલેજે સૈ લગા લેને કે કાખિલહૈ ॥

ખલીલ—વોહી જલિમ હૈ જો કે મેરે દિલ કો અપની કશિર મિકનાતીસ મૈ ખીંચ કર લેગઈ ઔર બર્ક તખસુમ ગિરા કર ખાક શ્યાહ બના ગઈ.

सेर.

तड़गो तीर जहिर न था कुछ पास कालिल के,
 धक्का धिर जे दिलपर ताक मारा तो क्या माया,
 रियाज—तो क्या सय मुय उसपर लोट गये और राह
 धरकमें कदम बढ़ा दिया मैने तो मजक तसव्वार कर रहा था
 मगर अलील साहज याद रभिये ॥

येह धरक वो है के पत्थर को दम मैं व्याप करै,
 करै धरक कि लस को जुदा पराज करै,

अक्सरांन हजरत तारीकत किताबमें मुलाहिज की होगी
 मियां कलीस को अथाके छनवाई मिस्टर दरहाद के शात कैसा
 सलूक किया—यशमये शीरी निकाला जन तक देदी मगर—गोयर
 मकसद मिला धिरजी न कुछ दरहादको दूसरै व्याप मुहम्मदिन
 और वो काम हिनूदसै धिस का नतीज इसवाई और बदनामी
 तक ली महकुद होगा ।

अलील—अप न्याहै नासह न अनिये ।

येह कहां डी दोस्ती है के अने है दोस्त नासह ।

कोई खोरा साज होता कोई गम गुसार होता ॥

जय दिलसै पहलू निकल युका हो तो डान नसीहत सुनै
 और डान असल करे:—

रियाज—मैने तो सिई अंजाम से अगाह डीया है अदाल
 किसी के—

मानों न मानों जने जहां अप्त्यार है ।

हम नेको पद दुन्दुरे को समझाये जाते हैं ॥

और हम हरतह शरीर हाल है मोड़ के मुन्तज़र रहो ।
येह हम ने ताउ लिया वो यहीं की है कभी न कभी तो
रसाई हो जयेगी—

पत्नील—वाहकेली भूष कही यहां एक मिनट एक साक्ष है
अक्षोस में ली पाक शहरमें जाहताहूँ येहलीनही भाव
म के उस गुलका किस यमन में धरहूँ और वो किसमाह
की जगर पाराहूँ—

रियाज—में भूष जन्ताहूँ आपू लक्ष्मी नारायन की लउकी
है अक्षर तुमनेली देखा होगा— भूषसूरत सै आदमी है
किस्ती कहर निरम ली है दौसो इपया तनप्याह परकिस्ती
रियासत में मुलाजमहूँ आजतो शायद यंहीं भौण्ड है—

अरुआ अय आप आराम कीजये देपो क्या तरकीब
निकासत हूँ यारो की कराभाते देपो अय स्कूलसे आये हु अ
अरसा हुआहूँ अय मकान पर हो आवें रातको पात होगी—
मुनब्बर व रियाज यल दिये और पत्नील तनछाई में इये
यार का कौट लेता रहा—नाजरीन न समझे होगे— पत्नील
अहमद कुछ आज ही का आशिक नहीहूँ पदके छोटी छत्र
में धसके साथ भेजा है और जय हीसे धनमें कुछ आपसमें

उलझत है इसकी वजह येही है कि पत्नील अहमद के वालिद
 भायू लक्ष्मी नरायन के मकान के सामने रहते थे (जसका
 तकरीबन ढाध तीन साल के होगये हैं) मगर अप्पतक दानोंमें
 उलझतकी शमा रेशन है और अप्प जमाने शम्पाय की तेज
 हवाने इसका पकका दिया है धन ढाध तीन साल में धन
 दोनों की कुछ से कुछ हालत होगई हुस्न शम्पाय से डान
 वाकिर् नहीं—मगर पत्नीलने आज तक किसी तरह पर
 बहिर न किया पकके दिल ही दिलमें धरकके शैलोंका परदारत
 करतारहा आज धत्तशक से येसाप्तगी की हालतमें जप सप
 पर धनहार होगया तो इसने नये पहलूसे दस्तोसि मद्द
 याही और अपनेका गिरझतार उलझत का जताया:—

दुसरा भाग.

शेर—जन्मे मोहपुष्पत का यमनमें पूछवो गुलसे ।
 के दामानें तहम्मुल याक है दर्याद पुलपुल से ॥

सुसराल का पत

भायू लक्ष्मीनरायन साहय का मकान बी शहरके मामूली
 मकानों से अरखेमें शुमार किया जाता है इसका पाला पाना
 निहायत उम्दा वज्र का है सामने नक्षीस तारों के जंगले
 लगाये गये हैं और काठ के मुनककश महाराजदार दर बनाये

गये हैं उनपर निहायत सकार्थ से सज्ज रंग डीया गया है
महाराजोंमें निहायत पुरा मतलुबी के साथ उम्दा उम्दा धमले
रहे गये हैं जे धनकी पुण सूखती के दुआला कर रहे है
मकान के अंदरनी हिस्से में दालान है उस में साहज पाना
आपू लक्ष्मीनारायन—प्यारी की मा तुम ने वो भत देया जे
प्यारी की सुसराल से आया बगवती (प्यारी की मां) नहीं
मुझे मातुम तक नहीं—ज्यों ज्या लिपते हैं

लक्ष्मी नारायन—यम्मा—(नौकरनी) मेरे डाट के जय से
वो भत लाना जरा धनकोबी दिपलाहुं देयायु किशोरीलाल
(समधी) अय्य ज्या रंग लाये हैं—हमने पहलेही कहा था
के धन लोगों से रिशत करना सरासर अेक अगडे का मौल
लैना है—यम्मा कैरन दौड़ी गधे ओर भत लाकर दे दिया
आपू साहज की आंखें गुरसे से सुर्भ होगध ओर भत के
धिस तरह सुना ने लगे

॥ भत ॥

जनाय आपू लक्ष्मी नारायन साहज—तसखीमात आपको
धत्तलायन कलमी डीया जाता है अप्रसोस आर आर आपको
तहरीर डीया के लडकी का गौना करेहो मगर आपने न डीया
अय्य लडके के भत से मातुम हुआ के उसने शादी दुसरी
करेही लडका जवानुव उभ्रया ज्या करता गां उसने मेरी

ખીલા રજમંદી એસા ક્રિયા-- મગર વો મુઝેકો સદહા ખુતૂત મેં તદરીર કર ચુકા થા કે ખુલા લિયા જવૈ--ખૈરજો કુછ હૂઆ સો હૂઆ અગર આપ પંદ્રહ જુનમે કે અંદર યહાં પોંહ્યાવે તો ખૈર વરના હમ જુમમેદાર નહીં હૈ ફક્ત

કિશોરી લાલ

લક્ષ્મી નરાયન--અખ ક્યા કીયાજઅ તુમ લોગોં કે કહને મેં મેં અકર ખજુજ તુકસાન કુછ નહીં--

છોટી ઉમ્મમેં શાદી કરદેનેકા ક્યા નતીજ હૂઆ અખ ઈસ હાલત મેં ભેજના ખહેતર હૈ આર મેં ભેજુંગા હરગિજ નહીં--

ભગવતી--અખમેં ક્યા કરું ઇન લોગોં કે અંદર કે હાલ સે આગાહ નથી ખૈર જો કુછ હૂઆ વો અપને દિલમે સમજતે હી ક્યા હૈ આર યેહ જો ઉન્હોનેં લિખ્યા હૈ કે મેરી ખિલા રજમંદી ખિલકુલ ગલત હૈ યેહ મુમકિન હૈ હર ગિજ નહીં યેહ એક તરકીબ હૈ યેહસખ ઈનકીહી કરતૂતહૈ વો લડકા બડા સીધા હૈ વો યેહ સમજતેહૈ કે પ્યારી કો રોટી કપડા ન મિલેગા પરમેશ્વર દેને વાલાહૈ યહાં ઈતના મૌજુદ હૈ કે પ્યારી કે અલાવા આર ચારકો ખિલા સકતે હૈ યેહ કુછ જરૂરત ઈસકે જવાબ દેને કી નહીં હૈ વો દો બહૂએં લાકર ખિલાલાવેં હમ પ્યારી કો હરગિજ ન ભેજેંગે ભલા હમ અખ ઉનકે લિખને પર કિસ તરહ ભેજદે--ખચ્ચી થી આર અખ ભી કાંન બડી

हैं पुरे चौबट्ट की भी नहीहुँ कलड़ी मैंने जन्म पत्री देखी थी-- कहीं आसाठ में नकर साव पुरा होगा।

लक्ष्मी नरायन--में हरगिज ऐसी हालतमें लेज नहीं सकता और लेजना कैसा डे दैने भी आया हो, उनका मतलब येह है--उनकी गरज होगी तो पुढ कर अयगे गोया उनहोंने हम डा मजपुर जता है हमको जइरत ज्या है डेई गुडा तो है नही कि लट्टी डा ड्रेक आये होमोज प्यारी की हरतरह आतिर व हिलजेई रक्यो वो किसी किरम का प्यास हिलमें न लाये पायुसाहय येह कहते हुये मरदाने कमरे में अये गये-- अय हम लगवती डा छोड कर बिपर वाते कमरे में अलते हैं जहां प्यारी अपनी हमजेलिये में बैठी है

रामदेई--अहन अय तुमभी तुमहारी सुसराव से भी भुलावे का भत आगया अय यहा हो घड़ी बैठ कर हिल पुश करलैने का वसीला भी जता रहेगा।

गौमती--हां अहन येह तो यही भगर ईन्है ज्या है येह वहां डे मजेमें हम लोगोंडा बूल अयेगी हम ईनका याद करते रहेंगे

रामदेई--अहन कहीं ऐसा न करना कभी हो भोल भत से तो जइर याद कर लिया करना ऐसा नहो कि वहां डे अश डे आगे अर्षों साथ पढने और भेलने वालियों की उलझत

इस भात में मिश्रित शरमाती क्यों हो प्योसती क्यों नहीं है
 दिलमें तो पड़ता पुश हो (अट से सीने पर हाथ रख कर)
 दृष्टि दिलको पुशी के भारे क्या हाल है प्यारी (भिगड कर) यलो
 रहनेको में ऐसी दृष्टिगी नहीं चाहती हरवक्त ऐसीपाते
 व्यंग्यहीनही लगतीहूँ येह कहे कर ईरन उसकी आंखों से
 आंसू निकल आये

रामदेव—पहन गोमती यलो आज भिन्न अलग नहीं
 जरा जरा सी भात पर आंसू पड़ाये देती हैं परमेश्वर
 जाने इसदिन सै धनकी हालत कैसी हो गई है उस दिनसे
 हम मन्दर से दरशन कर के आये हैं येह ऐसी ही हरवक्त
 पड़ी रहती है और जरा जरा सी भात पर भिगड जाती है
 कैसी ही पुशी की भात क्यों नहो मुसकराहट तक लयों पर
 नहीं आता वोही मसल है आगे आती थी हाल दिलपे हसी
 किसी भात पर नहीं आती ॥ येह कहती हुई दोनों यकीन
 गई अगर प्यारी नै तबज्ज नकी इस वक्त धनका यलो जाना
 हमारी प्यारी के वास्ते गोया एक पलाका टलना हुआ क्यों
 के धनके यलो जाने से एक भुतसन्वरा पिलवत में उसके
 पलक था अथ पदस्तूर सामिक सुरत सामने आई ॥

प्यारी—हां तो क्या येह सय है कि भुतसे दिल्ही उन्सीयतहै
 भुत कोतो यकीन नहीं आता वो उम् और थी, जय

ਕੀ ਉਲਫ਼ਤ ਅਘ ਤਕ ਤੁਝੋਕਾ ਕਯਾ ਰਹੀ ਛੋਗੀ ਛਾਧਿ ਵੇ ਅਧਧਨੇ
 ਕੀ ਉਮ੍ਹ ਕੁਛਾਂ ਘੁਵਾਯੋ ਘੁਵਾਲ ਛੋਗਧਿ ਕਯਾ ਤੁਝੋਕਾ ਧੇਛੁ ਮਾਲੁਮ
 ਹੈ ਤੇ ਮੇਰੇ ਦਿਲਮੇਂ ਪਹੁੰਚੇ ਸੈ ਅਫਰਾਜ਼ ਅੰਗ ਮੋਹੁਘੁਪਤਪੈਦਾ ਛੋਗਧਿ
 ਹੈ ਕਯਾ ਮੇਰੀ ਮੋਹੁਘੁਪਤ ਕਾ ਮੁਕਾਘਲਾ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੈ। ਅਗਰ ਕਰ
 ਸਕਤੇ ਹੈ। ਤੋ ਕਯਾ ਅਘ ਤਕ ਧੂੰ ਛੀਂ ਆਮੋਸ਼ੀ ਰੰਹਤੀ ਕੁਛੀਂ
 ਵੋਛੀ ਮਸਲ ਤੋ ਨਹੀਂ ਛੁਧ ਗਰ ਗਧੇ ਤੇ ਕਾਨਮੇਂ ਕਛੇਛੁ ਤੇ ਛੁ
 ਤੁਝਪਰ ਪ੍ਰਿਦਾ ਹੈ ਧੀਨ ਕਾਮਿਲ ਕਿ ਵੋਛੀ ਘੇਤ ਆਨਾ ਓਡਦੇ
 ਘੋਵੋ। ਆਜ ਧੇਛੁ ਆਮੋਸ਼ੀ ਹੈ ਅਘ ਕੈਸੀ ਆਫ਼ਤ ਛੋਗਧਿ ਹੈ
 ਤੋ ਐਕਸ਼ੈਰ ਕਾ ਜਘਾਘ ਘਾਰ ਸ਼ੇਰੇਮੇਂ ਦੀਧਾ ਕਰਤੇ ਥੇ ਆਜ ਵੇ।
 ਸ਼ੈਰ ਗੋਧਿ ਕਯਾ ਛੋਗਧਿ ਮਾਂਤ ਵੇਦੀ ਧਾ ਘੋਦੀ, ਪਰ ਵੁਟੀ ਅਘ ਨ
 ਅਫ਼ਸਨਾ (ਐਕਾ ਐਕ ਬਾਂਕ ਕਰ) ਹੈ ਮੇਂ ਕਿਸ ਸੈ ਆਤੇ ਕਰ ਰਹੀ
 ਛੁ ਧਛਾਂ ਕੈਨ ਹੈ ਜੇ ਜਵਾਘ ਵੇ ਡਾਧਿ ਸੁਨੈ ਤੋ ਮੁਝੇ ਕਯਾ ਕਛੈ
 ਅਰੇ ਮੇਰੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਮੁਝੇ ਕਯਾ ਛੋਗਧਾ ਤੇ ਮੁਝੇ ਅਪਨੀ ਝੁਲਵਾਧਿ
 ਕਾ ਲੀ ਘੁਵਾਲ ਨਹੀਂ, ਐ ਕਘਪਤ ਉਲਫ਼ਤ ਤੁ ਕਯਾ ਘੀਜ਼ ਹੈ
 ਤੇ ਆਫ਼ਮੀਤੋ ਘਿਲਕੁਲ ਪਾਗਲ ਆਰ ਅਪਤੀ ਘਨਾ ਵੇਦੀਛੇ ਸਾਮਨੇ
 ਐਕ ਫ਼ਰਾਜ਼ ਤਸਵੀਰ ਲਾਕਰ ਅਤੀ ਕਰ ਵੇਦੀ ਹੈ ਤੇਰੇ ਤੁਪਤ ਮੇਂ
 ਕੁਛੀ ਸਮਰ ਆਤਾਛੈ ਧਾਮਿਲ ਸਮਰਕੇ ਛਮੇਸ਼ਾ ਐ ਸਮਰ ਰਹਤਾ ਹੈ
 ਸ਼ਾਧਿ ਤੁ ਮੁਝੋਕਾ ਐ ਸਾਛੀ ਜਵਾਘ ਵੇਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਤੀ ਹੈ

ਸੇਰ—ਮੈਂ ਵੇ ਨਘਵੇ ਐ ਸਮਰ ਛੁ ਜੇ ਪ੍ਰਸੂ ਤੋ ਫ਼ਲ ਨਾ ਆਐ ਐਥਾਂ ਫ਼ੁ
 ਅਘਤਕਫ਼ਲਤੋ ਕਯਾਫ਼ਲ ਤਕਕਾਛੀ ਨਿਸ਼ਾਨਨਹੀਂ ਮਗਰ ਕੁਛੀ ਐਸਾ

नकरना औ परमेश्वर मेरी एसि प्रार्थना को कभूत करना और मुझ को लक्षण यास आशाना करना—यवो येह अतर हुवा एसि अत के आनने से अक अटका तो मिटाया मगर कही औसा न हो के फिर मुझे लेजने की राय होअये.....नहीं क्यों आके लाजा (वालिद) ने तो अडा जेर देकर येह आत कही है कि हम हरगिज न लेजगे पेर हाथ कोई धतना तक बी तो नहीं के असको अपना हमराज बनाजि और अपने दिव का माजरा सुनागे ॥

तीसरा आध.

जगर में चुटकिया लेती है हर तरफे दुगांमिरी
कहा सै लायेगा कसिद दहन मेरा जग्या मेरी
क्या तदवीर की

रात का वो, हिस्सा असको सुअह सादिक कहते हैं कुछ अजग्य सोझाना वक्तहै आटे सहरी के ठंडे ठंडे ओके कुछ एसि अन्दाज सै चलते हैं के वो मरीज बी जे तमाम शपशिट कर्षसेकरा हते रहे है और पलक सै पलक नहीं लगा है एसि वक्त सो गये हैं मगर मरीजन ईशक पर धनका बी कुछ असर नहीं उनको नीद कहा अकौलशेर,

असकादिव दिहवारमे हो असको कय आतीहै नीद
करवटे लेते साइ उठ जाती है नीद ॥

'ਓ' ਵੇਖਿਏਨਾ ਸਾਮਨੇ ਹਮਾਰਾ ਦਿਲ ਹੀਰੋ ਅਵੀਲ ਮਿਲੇ ਮਾਛੀ
 ਓ ਆਪ ਮਸੇਰੀ ਪਰ ਤੜਪ ਰਹਾ ਹੈ 'ਓ' ਕਰਵਟ ਅਵੀਲ ਆਰ
 ਆਦਰ ਸੇ ਮੁੱਢ ਘੋਲ ਕਰ ਕੁਝ ਕਢੇਨੇ ਲਗਾ, ਛਾਪ ਅਵਲਾ ਕਯਾ ਕਰੇ
 ਆਪ ਦੀ ਸ਼ਾਤ ਭੀ ਪਛਾਤ ਹੈ ਤੇ ਕਾਟੈ ਨਹੀਂ ਕੱਟੀ,
 ਯਾ ਓਲਾਹੀ ਸਾਧੈ ਦੁਰਕਤ ਦੀ ਸਹਰ ਹੈ ਤੇ ਨਹੀਂ,,

ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ ਅਵੇ। ਓ ਅਯਗਏ
 ਸੁਪਣੁ ਛੋਗਓ, ਭੁੱਕਰ ਲਾਂਭੇਡਾ ਗੁਲ ਦੀਆ ਕਾਮ ਜ਼ਰੀ ਸੈ ਫ਼ਾਰਿਗ
 ਛੋਕਰ ਐਠੇਹੀ ਥੈ ਫੇ--

ਅਰਬੀ ਟਰਫ਼ ਦਿਨ ਨਿਕਲ ਆਯਾ ਨਾਵਿਲ ਛਾਪ ਮੇਂ ਹੈ ਮਗਰ
 ਨਿਗਾਹ ਜ਼ਮੀਨ ਪਰ ਹੈ ਆਰ ਅਪਨੇ ਕਿਸੀ ਆਲਮੈਂ ਮੁਸਤਾਫ਼ਿ ਹੈ--
 ਰਿਆਜ਼ ਹੁਸੈਨ ਸਰ ਪਰ ਅਤੇ ਕੁਝ ਰਹੇ ਹੈ--ਕਹਿਏ ਹਜ਼ਰਤ ਕਯਾ
 ਛਾਤਹੈ ਛੋਲੀ ਰੋਜ਼ ਮੇਂ ਯੇਹੁ ਛਾਤ ਅਨਾ ਲਿਆ--ਮਗਰ ਵਛਾਂ ਡਾਨ
 ਹੁੰਸਤਾ ਹੈ ਗਾਯਾ ਲਾਲ ਲਖਮੀ ਨਰਾਯਨ ਤੇ ਆਵੇ ਆਨੇ ਪਰ ਹੀ
 ਮੈਂਜ਼ੁਦ ਹੈ

ਰਿਨਾਜ਼ ਹੁਸੈਨ (ਆਨੁ ਛਿਲਾਕਰ) ਅਰੇ ਆਓ ਕਯਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ।
 ਕੈਸਾ ਝਿਜਕ ਹੈ ਧੰਦਾ ਭਰਸੇ ਅਤੇ ਹੈ ਜੋ ਅਪ ਤਕ ਅਘਰ ਨਦਾਰਤ
 ਅਵੀਲ (ਥੈਕ ਕਰ) ਅਰਬ ਆਪ ਆਗਏ ਹਮਾਰੀ ਛਾਤ
 ਕਯਾ ਪੁੱਛਤੇ ਹੋ--ਯੇਹੁਕ ਹੈ ਅਵਲਾਨ ਹੈ ਅਵਲਾ ਕਾ ,, ਪੁੱਛਤੇ
 ਕਯਾ ਹੋ ਗਰੀਬਾਂ ਕਾ ਮਿਅਜ਼ । ਆਪ ਦੀ ਅਵਲਾਸੇ ਆਪ ਹੋ ਰੋਜ਼

સે કહ્યાં રહે રિયાજ—અરે યાર દો રોજ ક્યોં લગાયે દેતેહો સિર્ફ કલહી તો ક્યો કે વાલિદ સાહબ ધરગયે દુકાન પર બેઠના પડા

ખલીલ—ખૈર કહિયે ક્યા તદખીર કી ? દોસ્ત મેરા પુરા હાલ હૈ મેંનહીં જાનતા કે સીને મૈ ખજાએ દીલકે ક્યા ધુસ બેઠાહૈ કે એકે લહમા ચૈન નહીં બહોત કુછ ઈસ ખ્યાલ કે દિલ સે ટાલતા હું મગર ના કામચાખી

રિયાજ—બસા યારખાં જીસ ખાત કા વાએદા કરે વો પુરા નહો—મૈને બી ઉસકી કહારન કો ડૌર પર ચેઢાયા હૈ જો ખાસ વહીં પર પાની ભરતી હૈ બડે ઘિસ્સે દેકર રાહ પર લાયાહું યાર બડે ગજબ કી ઔરત હૈ ચલને મૈ તો પતાંગ કી તરહ ઉડતી હૈ તુમહારી તરફ સે ખાતો મૈ એસા માંઝા હૈ કિ ઉસકી હર એકે ખાત કો કાટ કાટ દે

ખલીલ—ખૈર બરાએ ખુદા ઈસ વક્ત જીલૈ બંદીકા રહને દો ચેહ ચોંચલે લગાને લા વક્ત નહીં હૈ જીસ રોજ વો હમકો ઉસ કે હાત કા પાન ખિલાવાદો તો હમ ઉસકો સુર્ખરૂ જાને ઔર જબ ચેહ તારીફત દુસ્ત હો અખતુમ જલદ ખતલાઓ વો કહ્યાં હૈ

રિયાજ—અખતો આતી હોગી ઉસને ઇસ વક્ત આને કા વાએદા કીયા હૈ તુમ ખત લિખ રખો ખિસ મિલ્લા કરો ઈન્શા અલ્લા દુખો ક્યા અંજામ ખખૈર હોતા હૈ

ਘੜੀਲ-ਤੁਮਕੋ ਮਨਕ ਛੀ ਸੁਆ ਹੈ ਅੰਯਮ ਘਘੈਰ ਛੋਤਾ
ਹੈ ਘੁਘ ਮਗਰ ਛੋਸਤ ਵਾਡੇਓ ਕਲਤੋ ਅੰਯਮ ਘਘੈਰ ਛੋਜਤਾ
ਘੁਰੀ ਛਾਲਤ ਥੀ "ਵੋ ਵੋ ਆਓ ਸਾਧਵ ਵੋਛੀ ਹੈ ਕਾਛੀ ਸੀ

ਘੜੀਲ-ਛਾਂ ਵੋਛੀ ਹੈ ਕਾਛੀ ਯਾ ਨਾਮਥੀ ਕਲਵੋ ਹੈ ਘੜੀ
ਘਲਤੀ ਛੁਛ ਹੈ ਉਸਕੀ ਤਮਾਮ ਉਅ ਓਸੀ ਕਾਮੋ ਮੈਂ ਗੁਜਰੀ ਹੈ
ਘੈਰ ਕਲਵੋ ਕੋ ਸਮਝਾ ਘੁਆ ਕਰ ਘਤ ਦਿਆ ਗਯਾ ਘੁਸ ਕੋ ਲੇਕਰ
ਵੋ ਰਵਾਨਾ ਛੁਓ, ਘਤ ਕਾ ਮਯਮੁਨ ਛੁਲ ਘੈਲ ਥਾ ,,

ਸ਼ੇਰ.

ਕਛਾਂ ਸੇ ਲਾਘੇਗਾ ਕਾਸਿਛ ਘਯਾਂ ਮੇਰੀ ਘਯਾਂ ਮੇਰੀ ॥

ਮਯ ਘਘ ਥਾਡੇ ਘੁਛ ਸੁਨ੍ਤੇ ਵੋ ਮੁਝਸੇ ਛਾਸਤਾਂ ਮੇਰੀ

ਘਾਰੀ-ਸਾਧਵ ਘੇਛ ਲਯ ਘਲਕਾਘ ਮੈਂ ਲਿਘਨਾ ਨਾ ਗਵਾਰ
ਛੋਗਾ ਮਗਰ ਉਲਛਤ ਮੁਝਕੋ ਓਸ ਮਯ ਛੇ ਤਛਰੀਰ ਕਰਨੇ ਪਰ
ਮਯਘੁਰ ਕਰਤੀ ਹੈ ਮੈਂ ਯਾਕਛੰ ਗੋ ਮੈਂ ਘੇਕ ਕੈਮ ਛੀਗਰ ਸੇ ਛੁੰ
ਘਾਨੀ ਮੁਸਲਮਾਨਛੁੰ ਮਗਰ ਕਿਸੀ ਘੁਤ ਕਾ ਘੰਛ ਘਘਘਨਛੀ ਸੇ
ਛੋ ਘੁਕਾ ਛੁੰ ਵੋਛੀ ਮਸਲ-

ਸ਼ੇਰ.

ਸਲਾਵਾ ਛੋਸ਼ ਤੋ ਮਰਨੇ ਲਗੇ ਛੁਸੀਨੋ ਪਰ ,,

ਛਮੇਂ ਤੋ ਮੋਤ ਛੀ ਆਓ ਸਾਧਾਘ ਛੇ ਘਲਵੇ ,,

ਓਸ ਕਮਘਘਤ ਉਲਛਤ ਪੇਂ ਕੁਛ ਮਯਘੁਘ ਵ ਮਿਲਵਤ ਕਾ
ਘਘਾਲ ਨਛੀਂ ਰਹਤਾ ਛਾਘ ਮਗਰ ਮੈਂ ਤੁਮ ਕੋ ਘੁਤ ਯਾ ਕਥੋਂ ਕਰ

ਵਿਖੁੰ ਤੁਮ ਮੁਝ ਪਰ ਘੜੀ ਘੜੀ ਮਹੇਰਆਨਿਆਂ ਕਿਆ ਕਰਤੀ ਥੀ
ਤੁਮਹਾਰਾ ਦਿਲ ਤੋ ਮਿਲੇਲ ਮੋਮ ਫੇ ਥਾ ਅਘ ਵੋ ਪਥਰ ਸੇ ਘਟਲ
ਗਯਾ ਛੋਗਾ ਖੁਦਾ ਨਾ ਕਰ ਆਦਾ ਆ ਕਿਆ ਵਿਖੁੰ ਰਹਮ ਕਾ ਆਵਾਸਤ ਗਾਰ ਛੁੰ

ਤੁਮਹਾਰਾ ਘਟ ਨਸੀ ਅਵੀਲ

ਰਿਆਯ ਹੁਸੇਨ ਅਤ ਦੇਖਨੇ ਛੋ ਮਾਂਗਨੇ ਲਗੇ ਮਗਰ ਭਦਦੀ ਸੇ
ਅਵੀਲ ਨੈ ਵਿਖਾਛਾ ਘੰਛ ਕਰਦਿਆ ਆਰ ਉਸਛੇ ਛਾਤ ਮੇਂ ਛੇਕਰ
ਰਵਾਨਾ ਕੀਆ-

ਅਛਾੜਮ ਆਘ.

ਆਂ ਭੀਡ ਮਕਨ ਫੇ ਹੈ ਛਰ ਪਰ ਲਗੀ ਛੁਧ,
ਆਸੈ ਸਭੀਲ ਹੈ ਸਰੇ ਛਾਸਰ ਲਗੀ ਛੁਧ;

ਮੈ ਆਨਾ

ਉਸ ਵਸਤਕਾ ਮਛਮਾਨਭੀ ਕਾਘੀਲੇ ਦਿਛਹੈ ਆਸਮਾਨ ਪਰ ਥਡਾ
ਛਾਧ ਛੁਧਹੈ ਕਭੀ ਕਭੀ ਨਹਨੀ ਨਹਨੀ ਘੁੰਦੇ ਭੀ ਪਠਨੇ ਲਗਤੀ
ਹੈਂ ਮੈ ਆਨੇ ਮੈ ਛਯੁਮ ਹੈ ਕਿਸੀ ਆਛੇ ਨੋਸ਼ ਕੀ ਆਵਾਯ ਹੈ-
ਸੇਰ.

ਤੋਆ ਕਰ ਆਛਿਛ ਕੜੇਂ ਤੋਆ ਮੇਂ ਆਸੈ ਵਸਤ ਮੇਂ,
ਧੇਛ ਅਛਾਰ ਆਧ ਛੁਧ ਆਰ ਧੇਛ ਥਡਾ ਛਾਧ ਛੁਧ,

ਨਾਯਰੀਨ ਜੋ ਛਰਯ ਤੋ ਛਮਾਰਾ ਭੀ ਭੜੇਛੋਗਾ ਆਂਕੀ ਛਮਕਾ
ਤੋ ਮਿਲਦਰ ਅਵੀਲ ਆਛਮਕਛੇ ਮਕਾਨ ਪਰ ਛਨਾਥਾ ਮਗਰ ਧਛਾਂ

के लुट् बी काभीने दीद होते है आज तो हम भी यंही
के लुट्केका मशाहिदा करंगे वीज्ये काठ शराब का मतवा-
ला अपनी धुनमें गजल उड़ा रहा है-

गजल.

करके हम मूरये छिपनास पिना साकी,
या वही लुल लुल शेषा की दुआ दे साकी,
गर काँई ईल कर पीकि शरीरतके पिनाइ,
किरतो अेशकमुजे सुली पे यडादे साकी,
नाम जम जम तेरा में जाना हस्ती में रहै,
देदे अेक जम प्यासा की दुआ ले साकी,
देया किस किस का तु मै किस का दिमायेगा जमल,
सम के सम टरे तेरे यादने वाले साकी,
काँई छाटी अहर में रट लगा रहा है-

गजल मोलिक.

कुंजये मै धंधर का ला साकी आज तो बार के ल पिना साकी,
हो जहा नसीबी काँ मैदे, मस्त अपना मुजे पना साकी,
उट के पीने दे आज तुझका, जम मुह से त तु हटा साकी,
तु पिनाये जे सुझका जम पेजम, हर्ज क्या है तेराबला साकी,
अेवो वो अेक गोस आया है यह तो चौकडी ही सदन
में दरपत के नीय ही छिटक गध-यसिये वहां यलै-

अेक-मशाहरा डोने दो-शिइ-

दुसरा-येह वीज्ये:-

ਸ਼ੇਰ.

ਐ ਸੇਘੇ ਨੇ ਕਢੇਂ ਮੇਂ ਗੁਲ ਰੰਗ ਤੋ ਛਮਾਰਾ,
ਐਸੇ ਤੇ ਅਸ ਲਗਾਏ ਸਰ ਪਰ ਉਤਾਰ ਪਾਂਝ,
ਤੀਸਰਾ—ਘਿਲਕੁਲ ਦੁਰਸਤ ਮੇਰਾ ਘੀ ਸਾਦ ਹੈ:—

ਸ਼ੇਰ

ਕੁਝ ਸ਼ਾਨ ਮਗਫ਼ਿਰਤ ਸੇ ਨਹੀਂ ਦੁਰ ਅਛਿਦਾ ।
ਝੂਧੇ ਗੁਨਾਹ ਘਾਵਹੁ ਕਸ਼ੋ ਤੇ ਸ਼ਰਾਬ ਮੇਂ ॥
ਪਹੁਲਾ—ਛਾਂ—

ਸ਼ੇਰ

ਅਛਿਦ ਨੇ ਕਹੁ ਘੁਰੀ ਕਿ ਧੇਹੁ ਫੀਵਾਨੇ ਆਦਮੀਏਂ ।
ਤੁਝੋਕੇ ਲਿਪਟ ਪਏਗੇ ਧੇਹੁ ਮਸਤਾਨੇ ਆਦਮੀ ਹੈ ॥
ਬੈਥਾ—ਐਕ ਮੁਝੇ ਘੀ ਧਾਦ ਹੈਂ:—

ਸ਼ੇਰ

ਮੇਂ ਈਏ ਤੇ ਈਕਰਾਰ ਪੈ ਘੀ ਹੈ ਰਮਜ਼ਨ ਮੇਂ ।
ਧੇਹੁ ਕਰ੍ਹ ਅਦਾ ਹੋ ਤੋ ਘਡਾ ਕਰ੍ਹ ਅਦਾ ਹੋ ॥
ਦੁਸਰਾ—ਅਜਕ ਅਦਲਾ—

ਸ਼ੇਰ

ਸਲਲ ਕਰਕੇ ਅਲਿਧੇ ਜਰਾ ਸੇਘ ਸਾਫ਼ਘ ।
ਧੇਹੁ ਮੇਂ ਘਾਨਾ ਹੈ ਤਿਘਲ ਕਾਘਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ॥
ਤੀਸਰਾ—ਵਾਹਵਾਹ ਤਿਘਲਾ ਕਾਘਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਮੁਨਿਧੇ

शेर

मुहलसिण पत्थरहै दिल् तेरा तेरे किसी कामका ।
 डालदे छसिका किसी मै जाने की दीवार में ॥
 मैथा—दाग—

शेर

दुख बल कर मेरे साकी की सभावत नहिद ।
 अक सागिर दौध भागे तो सण दूते हैं ॥
 अण धिर दणिये दौध हजरत साकी से अडरहेहैं
 शेर

में जुन्द भर पिलादे क्या हस रहा है साकी ,
 भर भर के पीते आपिर पैमाना आदमी है ,,
 अमाह आध ये आपही की दरथी येह दुसरे डान साहण
 हैं ओहो दणलिया पुण येह तो मुन्शी गोरण राम साहण
 के साहणनदे हैं—अइसोस क्या गोरण राम साहण युं शरण
 में परमाद होने का कमाध करके रणगये हैं येह वही मसल
 हैकि आप कमावे पैटा उडावे, आर येह तीसरै डान लकाये
 शरीर है—

अण पुण पड़ेयाना पंडित कन साहण के अयिराग
 हैं येह यहां कहां उस रोज तो उस भेयारे मुसलमान से
 रेलवडे मुसादिर जाने में लड पडेथे धंटां सलवाते सुनाध

नहीं- कुछ प्यात भी नहीं न आलुम चूट या सत्र कर
हात से हनुवर के उपर पानी डी छींट न पड़ी थी अथ इनसे
कोई पुछे येह शराब ने आप पीने को मुसलैद हैं कैसी हैं
जेकि नापाक होने के अलावा गलीज भी है इसको पीते
वक्त अक्सर लोग देखते हैं कि इस में सैकड़ों मच्छड और
बकभियां और कीड़े मकोड़े सड जते हैं जिससे कि फिर
शराब भीची जाती हैं अइसोस सद अइसोस वहां जन्म
पत्तरा बनाये और वहां पर इस कम्पत्त को मुंह लगा
कर मजे उठाये-- आज कसई पुल गध आंथ से देखलिया
अथ क्या मुकेशिंगे-मगर और हम किसीसे न कहेंगे वरना
तुम्हारे पंडासियों के नुकसान होगा मगर शर्त येह है कि
अथ यहां न देखे-और अथ हम किस किस का नाम लें
यहां कैई उजले पोश में नौश पुद इराभोश भौनुद
हैं वो देखिये कुरसियों पर उट गये

और हो जर्ज मगर जर्ज न में जाने से ॥

अहद शीशे में तो पैमां है पैमाने से ॥

ला बाई ला क्या दर हय शीशे युन दिये गये काथ न
रथ दिये गये यहां क्या थान्दौर शिइ-जम पर जम मढाये
गये फिरभी और ला और ला और ला की सदा काधम
अथ क्या था नशा ही आनद शिइ हुई कोई कुरसी से

ਨੀਥੇ ਗੀਰਾ ਕਿਸੀਂ ਕਾ ਸਰ ਨੀਥੇ ਪੈਰ ਕੁਰਸੀ ਪਰ ਕੇ ਮੁਢ ਸੇ ਥੀਸ਼ਾ
 ਲਗਾ ਹੈ ਔਰ ਗਾਨਾ ਹੋ ਰਹੇਹੈਂ ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਅਸਕਾ ਅਥੀ
 ਅਥੀ ਤਰਹੁ ਨਸ਼ਾ ਤ ਥਫਾ ਥਾ ਕਥਾਯ ਕੀ ਰਕਾਥੀ ਉਠਾ ਕਰ
 ਥਵੇ ਮਗਰ ਨਸ਼ੇ ਕੀ ਯਾਦਗੀ ਨੇ ਜਮੀਨ ਪਰ ਘਿਠਾ ਦਿਥਾ ਘਸ
 ਜਮੀਨ ਪਰ ਫਰਾਜ ਹੋ ਗਏ ਧਸ ਕਾ ਮਯ ਕਾਘਿਤ ਦੀਦ ਹੈ ਕਥੇਂ
 ਕਰ ਤਹਰੀਰ ਕੜੇਂ ਹੁਸੀ ਕਲਮ ਥਲਾਨੇਸੇ ਮਾਨਾਹੈਂ—ਕਠ ਕਠ ਕਠ
 ਕਠ ਕਠ ਕਠ ਕਠ.....ਕਠ ਕਠ ਕਠ ਕਠ ਕਠ—ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਘੀ
 ਕਥਾਯ ਕੇ ਲੁਕਮੇ ਲੇ ਰਹੇ ਹੈਂ ਔਰ ਉਨਕੇ ਮੁਵਨਨਸ ਕੁੱਤੇ ਸਾਹਯ
 ਥੀ ਸਾਥ ਹੀ ਕਥਾਯ ਥਯ ਰਹੇ ਹੈਂ—

ਸਭਤ ਅਕਸੋਸ ਹੈ ਧੰਸ ਕੀ ਛਾਵਤ ਔਰ ਆਵਤ ਪਰ ਨੇ
 ਯ ਥਰਮ ਖੁਦ ਧੰਸ ਛਾਵਤ ਕੋ ਦੇਖ ਕਰ ਥੀ ਧੰਸ ਕਥਯਭਤ
 ਕੋ ਨ ਓਡੇ ਖੁਦਾਵਨਦ ਕਰੀਮ ਹੁਰ ਐਕ ਅਹੁਲੇਧਮਾਨ ਕੋ ਧੰਸ
 ਸਰਾਯ ਖਾਨੇ ਖਰਾਯ ਸੇ ਮਹਕੁਜ ਰਥੇ ॥

ਪਾਂਚਵਾ ਘਾਯ

ਮੁੜ ਥਲਾ ਥਾ ਕੁਰਕਤ ਮੇਂ ਥਿਰਾਗ ਪਸਤੀ ।

ਕਾਮਘਾਥਾ ਤੇਰੀ ਤਸਵੀਰ ਕਾ ਰੋਗਨ ਕੈਸਾ ॥

ਘਟੋ ਕਿਤਾਯਤ.

ਘਈਤ—ਦੇਖਿਥੇ ਕਲਤੋ ਜਥਾਯ ਲੇਕਰ ਘੋਹ ਨ ਫਿਰੀ ਸਾਥਦ
 ਕੁੱਟੋ ਅਥੀ ਨ ਮਿਲਾ

રિયાજ—દેખિયે વહ સામને લપકતી ઝપકતી ચલી આ રહી
હય;; ખલીલને ખત લેકર ચાકકિયા ઓર પઢને લગા,

જનાખ મન

અફસોસ હૈ મુઝકો આપકી તહરીર પ્યારીકા લક્ષ્જ કિસી
અજનબી ઓર ગૈર લડકીકે વાસ્તે ઇસ્તેમાલ કરના ક્યા
દુસ્ત હય ક્યા તુમ મુઝકો ખૈખખર કિયા કરતે હો ક્યા
મુઝકો ઇતની ભી ખખર નહીં કિ કિસી ગૈર શખ્સ સે
રખખત પૈદા કરકે બદનામહુ મેં સચ કહતી હુ મુઝકો જરા
તુમસે ઉલ્લટ નહીં હૈ તુમકો મુઝસે હરગીજ ઐસી ઉમ્મેદ
ન રખની ચાહિયે કિમેં આયન્દા તુમહારે ખત કા જવાબ
લિખું સિર્ફ તુમકો આયન્દે કે વાસ્તે હિદાયત કરદી ઐસી
તહરીર મુઝકો બહોત રંજ પહોચાતી હય તુમકો ઐસી
તહરીર હરગીજ ન બેજની ચાહિયે જિસમે મેરી ઓર
તુમહારી દોનોં કી બદનામી હો બલકિ તદખીર ઐસી કરની
ચાહિયે કિ જિસસ આસાનીસે તુમહારે દિલસે મેરી ઉલ્લટ
કતઈય નીકલ બય ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે ચેહ ખાર
નિકલ બય યાની મુઝકો કોઈ અગુસ્ત તુમા ન કરે ઓર
તુમહારે ખયાલાત ભી ચકબ રહે ઈસ ખત કા જવાબ દેખને
કી મુઝકો હરગીજ જરૂરત નહી તુમ જરૂર ઈસ ખત સે સબક

લેકર ખયાલ બદ છોડદાગે કવી ઉશ્મેદ હૈ અતેર સ્યાહ ધખ્ખે
કા ખત દિલ સે નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા

રકીમા પ્યારી

ખલીલ—અફસોસ હાય લીજીયે કયા ઉશ્મેદ કી જાયે હમતો
વહલી નસહ ચેહ ખત કયા હૈ એક નસીહત નામા સચ હૈ
તદખીર કિસ્મત કી ખુરાઈ નહીં જતી

રિયાજ—(દેખો ચેહ કહકર શુરૂ સે આખિરતક પઢગયે)
વાકઈ અગર ઇન્સાફ સે દેખા જાય તો બિલકુલ સચ અબ
ક્યા કિયા જાય (ફિર ગૌર સે ખત દેખકર ચોર પઢકર એકાએક
ઉઠવકર) ખુબ હોસ્ત અબ શિરની ખિલા ઓ અબ તુમહારી
મુરાદ પુરી હોગઈ

ખલીલ—વાહવા આપ મુઝકો ક્યાં ખનાતે હંચ સાફ જવાબ
તો લિખદિયા ખલિક આયન્દા ખત કે જખાબ કા ભી ઈન્કાર હૈ

રિયાજ—લુત્ફ તો ચેહી હૈ કિ ઈસપર ભી તુમ કામ ચાખ
હો જખાગે અખતો તુમ હોશતોં કી અખ્યારી કે કાખિલ હોગે

ખલીલ—ક્યા અબલીકોઈ તદખીર જહનમેં આઈહૈ

રિયાજ—તદખીર ક્યા તુમકો ઉસને હીં કામ ચાખી કી ઉમતેદ
દિલાદી તુમને ઈસ ખતકો ચોર સે નહી પઢા દેખો આખિર સતર
કા આખીરી જુમલા ફિરસે પઢોઃ; સ્યાહ ધખ્ખેકો ખતેદિલ સે
નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા ચેહ ઈશારા હય

ગોયા ઈસ ખતમેં સ્થાહ ધખમેહું ઉન સતરોં કા નિકાલ
કર પડો

ખલીલ-દેખું આહ હાહાહાહા વાહ

ઉસી ખતકા અરલી મજસૂન

જનાબ મન

અફસોસ હું મુઝકો આપકી તહરીર ખ્યારે ક્યા તુમ મુજકો
ખિલકુલ મે ખબર ખયાલ કરતે હો ક્યા મુઝકો ઇનીલી ઉલ્કત
નહી હય તુમકો મુઝસે હરગિજ આમીં ઉમમેદ ન રખની
આહિયે કિ ઐસી તહરીર મુઝકો રંજ પહોચાતી હય તુમકો
કોઈ ઐસી તદખીર કરની આહિયે કિ જસહે આસાની સે
તુમહારે ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે થેહ ખાર નિકલજાવે
યાની એકજરમેં ખાસ ખત કા જવાબ દેખનેકી મુઝે કવી
ઉમમેદ હું

રકીમા ખ્યારી

રિયાજ—તો ઓર ક્યા લોગે ક્યા ખતકે જમાબ મેં વોહ
ખુદહી ચલી આઐ મગર દેખો દોસન ક્યા અકલ મંદ
લડકી હૈ મજમૂન દેખો કિતના ઉમ્દા ઓર જુ માની હૈ કિ
જસને ખિલકુલ ના ઉમમેદ કરેકે ઉમમેદ દિલાદી ગજબકી
આકિલ હય દેખિએ અગર કોઈ દુસરા ઈસ ખતકો સરાસરી
તૌર પર દેખે તો હરગીજ થેહ મતલબ નહીં નિકાલ સક્ત

ખલીલ—હાય ક્યા પ્યારી હય તહરીર ખસ હાયે
ચુમતે દુસરા ક્યા મુઝહી કા ઘોક મેં ડાલ દિયા (ખત કા
ખોસા લેકર) હાય નામ ભી ક્યા પ્યારા હૈ “પ્યારી” સય
હય હોભી તો તૂ પ્યારીહી ।

રિયાજ—દોસ્ત ઉસને ઈસમેં તુમહારી અવજ કી ભી જાંચકી
હય ઇતકાક હી સે ઇસ વક્ત મતલબ નિકલ આયા વરના
ખડે અહમક ખતતે ॥

ખલીલ—અમ ક્યા જનાખૌ લિખના ચાહિયે મજમુન નિગારી
તો મુઝે ઈસ વક્ત સૂઝતી નહીં દો હરફ મેં જવખ
લિખે દેતા હૂં ।

કાગજ કલમ ઉઠા કર થોં લિખદિયા

જન ખલીલ

તુમહારે ખતને મસીહ ઈ કરકે મુઝ કરીમુઝ મગર
જન ખખ્શી આગર તુમ કર સકતી હો તો સખ કુછ હો
સક્તાહૈ મેં હર તરફ રખાંદ હૂં મેંતો અપને કો તુમહારે
નજર કર ચુકા હૂં

સેર—તરકીમ ખમ હય જો મિજાજ યાર મેં અઝે
દેખીયે પરદા હિજર દરમિયાં સે કમ ઉઠે

ખલીલ

રિયાજ હુસેન કો ખત સુનાકર કલ્લો કો નજર કિયા ઝોર
હો રૂપે ઈનામ દેકર રવાના કિયા રૂખસત રૂખસત ॥

છટા બાળ

દોનોં આલમ કી મુયસ્સર મુજે દૈલત હોગઈ
 નમવર પહેલુ મેં બે વોહ ચાંદસી સૂરત હોગઈ
 પયામે ચાર

નાજરીન—આજ કરીબ એક માહ કે બાદ હમ આપસે
 મિત્રે હૈં કયોં કિ ઈસ અધ્યામ મેં કોઈ ખાસ ખાત કાખિલ
 નોટ કરનેકે નહીં હુઈ સિવાય ખતૂતકી આમદ રૂપત ઈજહાર
 આરબુકે ઈસ વક્ત સૂરજ ગુરૂબ હુએ કરીબ ૧૥ ઘંટા
 હો ગયા હૈ મિસ્ટર ખત્રીત અકમદ સાહબ કહીં જને
 કે તય્યારિયાં કર રહે હંચ યાની સિફ અચકન વગૈરહ
 પહેન રહે હૈં કયોંકિ ઈનકા કોઈ ખાસ પહેન ને કી જરૂરત
 નહીં હુઈ હર વક્ત ઈનકા લિખાસ જરા વજ અદાર રહેતા
 હય ઈનકા કોઈ ખાસ રાસ્તા હોને કી જરૂરત નહીં મગર
 અબી યેહ નહીં ખુશ કે યેહ તૈય્યારિયાં કહાંકકી હો રહી
 હૈં અઅજ રિયાજ સાહબ આગે સખ કુછ માલુમ હોગા

ખત્રીત—દેખો વોહ ખત મેજ પર મડા હય !

રિયાજ—ખત ઉઠાકર પઢને લગતા હય ॥

ખત

જનાબ મન

ધસી વક્ત તુમ જરા સિફ ૧૦ મિનટ કે વાસ્તે હો જઓ

મેં ખાગીએ મેં મિલુંગી મુઝેકા તુમ સે કુછ કહેના હમ
આજ લાલા યહાં નહીં હય ખહોત જદદ આએ શરાફી
દરવાજે સે આના ॥

પ્યારી

રિયાજ—અચ્છા યોં કહિયે આજ શય અન્વલ હૈ વાહ દોસ્ત
ખલીલ—યાર હમસે તો ખાત લી કરની નહીં આતી ઓર
ખાસકર ઉસકે સામને ક્યોં કર જખાન ખુલૈગી ॥

ખલીલ—અહમદ સાહબ ખનટન કર રિયાજ હુસેન સે
ફખસત હુએ

નાજરીન—ખલીલ અહમદલી કુછ હુસેનોં સુરત મેં કમ ન
થા ઉસને લી વોહ શકલ પાર્ઠ હય જીસ પર તમ રફલકી
હમેશા નજર રહી હય ઓર સૈકડોં આપસ મેં રકાબત
કરકે લડ મરે હય ફિર ઉસપર જરાની ઈસ વક્ત ઈસકી
ખુશીકા અંદાજ હમારે ખયાલ સે બાહર હય કદવો આગે
ઈતલા ફેને કો બ ચુકી હય ઈસ હસીન ચૌહક સાલ માહકે
બેખન કો ન પુછિયે ગોયા એક હુસન કી દેવી ઉમકા સહી
ફાદ ખીંચના તો મેરે ઈમકાન સે બાહર હૈ મગર સિફ
ઈતના લિખ દેતા હું કિ નાજરીન મેં સે કોઈ કૈસાહી બહિદ
ઓર પારસા ક્યોં નહો દેખકર બે તાબના બે ખુદ હોકર દિલ
મેસોસ કર રહે બય ઈસ મેં જરા લી મુખાલિગા નહીં કિ

जोया जागीयोमें डाह काइ से कोठ परी उतर आध है कि
 ने किसीके धन्तिजर में रोशपर टहल रही है ज्वीन
 अइमद को आते हुये देखकर दौरेन परामदे से होती हुई
 कमरे में ओक कुर्सी पर आ बैठी ज्वीन अइमद का कमरे
 में दृष्टि होना था कि जरा शरमाई आव न मे येह
 सेर अदा किया ॥

वोह घर में आये हमारे पुछा की कुदरत से ।

कली हम उनको कली अपने धरेको देखते हैं ॥

प्यारी— साहेब हम ऐसी हालत में आपकी क्या
 तवज्जे कर सकते हैं योरी योरी मिलना इसमें तवज्जे की
 कौनसी सूरत है ॥

ज्वीन—(ओक जड़ी हिम्मत करके कांपती हुई आवाज में)
 साहब आप धिने क्षसिने पर बैठी हैं (हाथ पकड़ कर)
 जरा धसतराई को कुर्सी पीछे कर आनध येह तवज्जे
 क्या आपकी थोड़ीहै कि इस नायीज को आपने याद किया
 प्यारी—हाथ छुड़ाकर) अली आप मुझे हाथ लगाने का
 हक नहीं रखते येह मे हयाध बी धिस्तेमाल नकीजये
 हाथ लगाना आसान काम नहीं जपतक आपमेरी चन्द
 बातोंका जवाब नदे और डाल नकरें वोह पढात मुशकिल
 सवाल हैं ॥

ખલીલ—મેરી જાન ક્યા વોહ સવ લા ઐસે મુશકિલ
હૈં જાન્કા મેં હલન કરસકું ખુદા ન કરે યેહ નામુમકિન
હય ઈસસે જાયાદા ઓર કાઈ સવાલ ન હોગા કિ આપ
જાન તલબકરેં બ ખુદા વોહ બી દેને કા મુસ્લઈદ હૂં ॥

ખારી—ખેર રહને હીજાયે ઐસે તો હમને અક્સર લોગોં
કા કહેતે સુના હય ક્યોંકિ ફિકરા જખાનસે નિકાલના તો
આસાનહય ઓર પરમેશ્વર ન કરે મેં જાન ક્યોં તલબ
કરને લગી જખ વોહ જાન ન હોગી તૌ યેહ જાન કબ
હોગી મગર સિર્ફ મુઝકા યેહ કહેના હય કિ ઈસ ખાતસે
તુમ બખૂબી આગાહ હો કિ મેરી કામ ક્યા હયે ઓર દુસરે
યહાં પર ઈસ તરહ મિલને સે અગર આજ ન ખુલી તૌ
કલ જરૂર ખુલૈગી ઈસ વાસ્તે અગર મુનાસીબ સમઝૌ તૌ
યહાં સે કિસ્તી દુસરી જગહ ચલો જહાં હમ ઓર તુમ બે
ખટકે ઐશ સે ખસર કરેં ॥

ખલીલ—ખસ યેહ સવાલ થા યેહતો ખેરે હશખ મુરાદ હય
મેં તૌ તુમહારી રાયકા મુન્તિજરથા મેં હર વક્ત તૈયાર હૂં ॥

ખારી—ખસ તો નહીં એક મોકા આને વાલા હૈં ય ની
આજ સે ચોથે રોજ મેં રોજ ઘાટ ગંગા સ્નાન કા જાગી
તુમબી મેલા દખ્ખનેકા તૈયાર હોકર આના વહીં સે શખ કી
ગાડીસે હહેલીકી જાનિય કૂચ મગર યેહ હાલ કિસા પર ન

भुत्ते देणो क'पप्त छिड़न वालदेन डो छुडाने पर मजपूर
कर नही है ये मोहपप्त येह करशमे ।

पलीत—पडेतरहय अप रात नयाद्य गछ आओ आर
म करे ॥

नाजरीन—अप आगे लिपना तहज्जसे पाहर प्याल किया
जता है एसि वास्ते इप्सत होते हैं हां येह जर हय के
अन्दर से कुछतो आवाज पाते की आती ओर वोह पाते
सी होगछ पटिक सिई यूडियों ओर पाज्ज की जनकार
सुनाई देती रही मगर अप वोह सी माखम नही होती
है के पलीत आमद मुकाबिल पर गालिय आ गये ॥

अप आगे लिपूं मे सरोदस्त
होता हय इवात मे कलम भस्त

सातवां पाण.

कअपा ओर पुतपानेका जनना पिगडना देणा
पाने परपादी किसी की हो किसी का घर जाने
मेला से डिकर का मजभूत

सुपह नमूदार हो यली है आर पज की पाडी छुटने
मे सिई १० मिनट पाडी रहगये मुसाफिर अपना अपना
पेरिया पंधना सप्ताले हुये गाडी मे सवार होते होते हैं

આજ અઝઘહમ મઝમૂલ સે જીયાદા હૈ ઓહો આજ રાજ
 ઘાટ કા મેલા હય હમારે હીરો મિસ્ટર ખલીલ અહમદ સાહબ
 બી એક તરફ ઠા ખડે હુએ મશોશ નિગાહ સે ઈધર ઉધર
 દેખ રહે હંય લો અબ ઉનકી મશૂક નિગાહ એક અજબ
 નિગાહ સે બદલગઈ યાની સામને જહાં પર એક લડકા
 જસકા સન કરીય ૧૫ સાલ ઠે હોગા ઓર એક અધેડ
 ઉમર કી ઓરત જસકા શબાબ કા જમ ના ખતમ હુએ
 અસી હોગયા હય ઓર એક લડકી ગાડીમેં સવાર હોને ઠા
 બ રહી હય દેખ રહે હૈ ॥

નાજરીન યકીન હય કે આપ પહેયાન ગયે હૈ કે જેહ
 કૌન લોગ હૈ લડકી કૌ તો જરૂર હીં પહેયાના લિયા હોગા
 વોહી હમારે ખલીલ અહમદ કી દિલદારહ પ્યારી હય સિફ
 જેહ દોનોં જૈની હૈ જનમેં સે એક પ્યારી કી
 મોંસી (ખાલ) હય ઓર એક ઉસકા ખાલા બદ ભાઈ હૈ
 પ્યારી એક અજબ અંદાજ સે સબકી નિગાહ ખચાકર પીછે
 ફિર ફિર કર દેખતી જતી હય યાની

ઉનકી તરફ નિપાહ ઠહરતી નહીં મેરી ।

દિલ મેં હય જેહ ખયાલ કોઈ દેખતા નહો ॥

ધન્દી હોગઈ-મુસાફિરોં કા ગાડી મેં બેઠના અબ ખતમ
 હોગયા લીજયે અબ વોહ સિંગલ લી ડાબીન હોગયા ગડી લી

रवाना होगध और इट्टी बरती हुई धर्मियानी स्टेशनों का छोड़ती हुई राज घाट नरदहर स्टेशन पर पहुँच्यगर्ग गो मेला अथवा साक्ष्यअच्छीतरह नहीं हय मगर बीड बी कमनही अश्नान शिड़ होगया जनाना घाट पर याशं सरे पुलपर भडे धूर रहेहैं हर एक निगाह जनपर येबाक हय किसी के अगुर नुमा पिस्तां पर ताक हय ।

एक दूसरे का मुष्पातिण कर के आवाज से कस रहे हैं जनारसी साडियां भी अच्छी होती हैं काँई इरमा रहेहैं नकरा इसरना देपिये काँई ये तमांशा बिस्ला डो

अरे यार उधर देपो अथ अयारहोगया नेकुछ रहेभी गया था वोह सादीके बीग जाने से पोशी दा न रहा मैदान बिलकुल साक्ष है गरजे के आनंद और तैं पसन्द तभी अत वालोंके नेकुछ दिलमे आता है कहते हैं हमारे हीरो धन भी मान्हुँ नडा धोकर इरिग होगध और अथ क्यामपर आकर नया जेडा तपदीलि करलीयाहैं नाजरिन-अथ मेलेडी सैर करते करते शाम होगध आइताण दीमेलेडी-सिपर और भस्तुरात डी धूराध रीसे इरागत पाकर मगरिअडी तई रवानः होगया और मडा ताण अपने कमसिन शौक के साथ सितारों के इस्तयाक तद्रीह में पिरामा पिरामा आरहहैं अथ तकरीबन शब्द १२ पजे होंगे पाजरमे बिलकुल सन्नाटा छाया हुवा हय आमाद रक्त पंद है

हैं येद फात है जे अघरेमें नतडा प्यरी हय अयछा
 औरसे देभनेसे पड़यानलिया हमरी हरो यन प्यारी हय
 अदीन अहमद का छतिअर है अदीन भी आगये और
 बीछये छिस्टेशन परहदुअगये देहदीका टिकट सैकिन्ड क्लास
 का ले लिया गयाहै थर्ड क्लासके वरैखी और मुरादा पाहो
 जनेवाले मुसाफिर अछप छगतरा में हैं कि कहीं हमरह
 न जाय क्योंकि अजयाम जिस तरह है बीछये गाडी आन
 पड़ुयी सवार होलये गाडी छुटगई मुसाफिर बहुत रहगये
 हैं छिस्की आवाज व रइतार में तदवीकी डेरी हो गई
 अट अट अट अट अयछा रेलवे पुन डो अपूर कर रहे
 हैं हिन्दुलोग जकारो के नारे जुलद कररहैं हैं वोअ श्री
 गंगाजी ही नै पैसा पैसा पर कैकरेहैं पुन अम हुआ गाडी
 सपाट बरनेलगी लक लक प्यारी और अदीन अहमद बैठे
 हुअेह सिपासप्यारी ने दुसरा तबदील कर लिया हय कि
 काई पड़यान नवे अइसोस हाय गजप गजप अे उइत
 अे कमअपत तुअंका ओलाहो वासदेन से छुडाने में जरा
 अयाल नहीं होता जरा पशोपेश नहीं करने देती जेदिल
 में आताहय कर गुजरनेदेती हय तेरे हाथों अैसे भजपूर
 हो जते हैं कि वासदेन ही जरसो छिउलपत व मैहअपत
 और मेहनत ही जरा परवाह नहीं करती तेरा अर्ताव और

અસર બુદે ઓર જવાન ઓર બચ્ચોં પર ચકસાં હોતા હમ
ખલીલ અહમદ કો ૧૬ સાલતક પરવરખ કરને વાલે વાલદેત
કલકો ન પાકર અપના કયા હાલ કરેગે ગો વોહ બહુત ખુશદે
મગર હિન્કો ક્યા ક્યા ખ્યાલ ખદ ન ગુજરેગે

બાપુ લક્ષ્મી નારાયનકો જખ ૧૫ સાલ: લડકી પ્યારી કે
મુમહો બનેકી ખખર હોગઈ તો વોહ અપની આખર પર
ક્યા ક્યા આસૂ ખહાયેગે ચેહ હાલ દુસરોં પર બહિર કરને
હુએ કેસે કેસે ન શરમાયેગે ॥

બદિક અપની ઈજ્જતો આખર કા ખ્યાલ કરકે દુસરોં પર
શાયદ બહિરલી ન કરેં ઓર દિલહી દિલમેં શક્કત પિઠરી
સે અપને જીગર ગોશ: કા ખ્યાલ કરકે બુદાઝ કે ગમકે હાયોં
હલાક હો બાયેગે નાજરીન હમ દેહલી કે ઇસ્ટેશન પર અ ન
કે પોંચાકર રખસત હોતે ઈશા અદલાહ કલ મુત્ર કાત હોગી

બાબ આંઠવાં

અખતો આરામસે ગુજરતી હૈ

આકખત કી ખખર ખુદા બને

કયામે મજલિસ તરખ

દેહલી મેં ક્વારાસે રામા ઠેઠરી કલ કમ્પની કી તર્ફ સે
બને વાંલી સડક કે મુતસિલ એક કૂચેમેં એકમકાન

मिथुन मामूली हयसियतका है उसमें भलीस अहमद और
प्यारी बैठे बैठे बातें कर रहे हैं ॥

भलीस—यत्रो मकानतो अच्छा मिल गया किसी किरमई
तकलीफ़ न उठानी पड़ेगी गुसल पाना बप्परची पान सण
मौजुद हैं

प्यारी—हां मकान मिल गया मगर आपने किसी आदमी
की तजवीज़ दी बग़ैर आदमी के किस तरह काम चल उठा है .

भलीस—अजुतो अबमें गया किस वास्तेया सणका
बन्दो बस्त कर आया हूं यहाँ पर मेरे पडे दास्त हय
कि किसी किस्म की तकलीफ़ न होगी क्योंकि वोह मेरे कलास
केवो (हममक्तव) (सड़ पाठी) हैं अली गडमें पांयपरस
तक मेरे साथ तादीम पाई है और हाथिस्फ़ में वोह और
में पढते रहे हैं बलिक वोह मेरे ही मकान पर थे अब
यहां पर उन्का मकान है और एक माकुल मशार्थ रेपर किसी
कम्पनी या कारखाने में जुला लूमहैं यैतौ मेरे एक
अजुजभी मौजुद हैं मगर उनसे रिस वस्त मिलना भिलाइ
मसलहत है में हर बातका बंदोबस्त कर आया हूं सामान
नज़री करनीयर वगैरह अब आता होगा एक औरत और
एक लडका भी आता होगा हमें कुछ फ़िकर न करनी होगी
अब आप छत्मीनान रणिये मगर हां येहुतो करमाधये तुम्हारे
आने वगैरे का क्या होगा

प्यारी—आपसे प्यारे तुममुझसे आप इसभुआभिबे में कुछ न कहे। अवश्य तो में कुछ छुत जातके कुछ समझती नहीं और मेरे असीदे भी हावत तुमपर रोशन हो जायगी और दूसरे अमक्या में तुमसे जुदाहो सवती हूं और अगर जुदा प्यस्ता जुदाभी कुछ तो बोझ्या अपने साथ मुझसे निवासके हैं हरगिज नहीं में उनके नजदीक किसीकाम की नहीं

अधीन—प्यारी आप कैसी जाते करती हैं जुदा नकरें जुदाई का मनहूस दिन दिखाना नसीब हो अगर जुदाई मंजूर है तो महारी तुम्हारी जन्मगी यकज कटेगी और हमारा मजहब अगर तुमको इस मजहब के उम्दा लगे भावूम होतो इसीकी पैरवी करो वरना तुमको क्षम्यार है

प्यारी—अस इसप्यारे में तुमझारे कहेनेकी जरूरत नहीं है मैंने जेहात कितायें देभीहैं शायद तुमको अपने मजहब में धितनी वाकियत न होगी जितनी किमें वाकिफ हूं वो वोह कुर्सियां जगैरा आगई करीने से लगवादे सामान सज करीने से लगगया ॥

प्यारी—जहेतर हुवाकी तुम्हारी मुलाकात निकली

अधीन—मुलाकात क्या बाईसे ज्यादा हय (दरवाजे पर आवाज हंसकर) वो वोह गिरजभा में दोस्त आगये बुलाये लेता हूं

મિરજાખાં—મકાન ઠીક છે અગર નહોતો દુસરા મૈજુદ છે ॥

ખડીત—મકાન બકોતડીકે છે સખ તરફ આરામ હય સામા-
નથી સખ આગયા આદમી ઠાન સાલાયે

મિરજાખાં—યેહ આદમી મૈજુદ હય ઓરત શામ છે
આખાયગી

ખડીત—યેહ અચ્છા યેહ શખખ ખનાપકા સક્તા છે

મિરજાખાં—(મુઝાજીમસે) ક્યાંમે શૈરાતી

શૈરાતી—ખૂ ખૂ ખૂ ખૂ જનનાહું ઉસદિનખાયુ જીને દો
દાવત મેં દોફને કિસકે હાયકે ખયે થે આલીતે ભુ ભુ ભુ
જૂત ગયે ચૈયાહી તો દિન છે

ખડીત—અચ્છા આપ હકલે લી છે

મિરજાખાં—અજી હજરત આપકે તખી અન અતકે મુવા-
ફિક હય ઇસકા ગાના સુનિયે જમ હકલી જવાન સે (અસીયા
બાગી સુન્દરબન જરગયૈ!)

ખડીત—હાં ખુબ યાદ આયા બાજ શખકા લેને અના ઓર
આપ કહી આઝે મગર હરામીનિયમ જલ્દ કિસી કે હાય ભેજ
દેના ક્યોકિશાયદ આપને દફતર સે નૈ. હય ખજરતકા અતેદાગે

મિરજાખાં—બાજ મેં અલી ભેજતા હું

(યેહ કહકર ખડે હોગયે ઓર કહા) લો આમ દફતર કો દેર
હોતી છે બેકાંમકો ધરપર બકર. પૂરા કરના સત્તામ અલૈકમ

ખલીલ—ફિર કબતક આધયેગા

મિરજખાં—ખસ દફતરસે વાપિસ હોકર

મિરજખાં—રખસત હુએ

પ્યારી—મિરજખાં ખિયારે બહોત અચ્છે આદખી માલુમ હોતે હૈં

ખલીલ—બહોત અચ્છી આદત ઓર ખાસકર મેરે વાસ્તેતો દિલોઝન સે મૌજુદ હૈ (નાજરીન શામ હોગઈ) યેહલોઝ ખાના બગૈર ખાકે ફારિગ હુએ હીથે કિ બાઝ આગયા; પ્યારીકાશી હમેશા ઈદમ મૌશુકસે શૌક રહાયા દેખતેહી કહનેલગી લો અબ કુછ સુનાવો બાઝ આગયા ખલીલ અહમદને બાઝ લેકર સુર દુરસ્તકિયા ઓર યેહ ગજલ શુરૂઆ કરદી

॥ ગજલ ॥

હસીન સારે જમાને મેં જો તુમસા હો નહીં સક્તા
તે ઈન્સાન ખાવફાઈ મુઝસા કોઈ હો નહીં સક્ત
બુલાનેપર હમારે ક્યા ખરે બનકર વોહ કહતે હૈં
હય વાઈદા દુસરે સે આજ આના હો નહીં સક્તા
ખૂબીસે ફેક કર તસન્વર અપની કહ રહે હૈં વોહ
કયામતતક ખલીલ આહાતુમ્હારો હો નહીં સક્તા

ખલીલ અહમદ ને ગજલ કો તમામ કિયા ઝોર પ્યારી કી
તર્ફ ઇશારા કરેકે અપ્પ જલ્દ તુમ સુનાવો
પ્યારી ને બાદ ઇસરાર ગજલ શુરૂ કી

॥ ગજલ ॥

હમારે વાસ્તે ઉન્કી નઈ તાજર નિકલી હૈ
કિ અદમિયત હાથ ગૈરૌંકે ખેહતાશફીર નિંકલીહૈ
નહીં હોતા હય ખલી ખતભી ઉન્કા છેડસે ઐ દિલ
જે ખોલાખત કો પડલે ગૈરકી તસ્વીર નિકલી હૈ
યેહક્યોં ખેલે હૈં તુમને આજ અપને ગેસુએ પેચા
કિસે પાખંદ કરને કે હિયે જાજર નિકલી હૈ

યેહ ગજલ ખતમ હોલીથી કિ મિજબાં આ મોજુદ હુએ
કે બજે સતતકે સગત રહા બાદ કા હાલ ખુદાજને

નવાં બાબ.

લાયા હય મુદતકે બિખુડે હુએં કો
ઇલાહી તેરા શુકર ક્યોંકર અદાહે
ખાના આબાદી

નાજરીન આજ ઉસરાતકો ગુજરે હુએ કરીખ એક સાલ
યા ઉસસે જ્યાદા હોગયા હય જસરાત કો મજલિસ નિશાતો
દુરખ છેડકર રૂખસત હુએ હૈં યેહ અમના લોગોંકા ઐસો

ਅਸਰਾਮ ਸੇ ਅਸਰ ਫੁਰਾਏ ਕਮਾਂਕਿ ਅਤੀਤ ਅਤਮਦ ਸਾਦਮਾਨੀ
ਉਤਕਾਰ ਖਾਨੇ ਮੇਂ ਐਕ ਮਾਫ਼ਤ ਤਨਖਾਘਰ ਮੁਕਾਮੁਮ ਫੇਗਰੇ
ਏ ਭੁਜਮੇਂ ਫੇ ਮਿਰਜ਼ਿਆਂ ਏ

ਅਜ ਚਿੰਤਾਵਤ ਉਸ ਮਕਾਨ ਚੋਂ ਫਾਹਿ ਨਹੀਂ ਹੈ ਸਿੰਝ ਅਤੀਤ
ਅਤਮਦ ਐਰ ਘਾਰੀ ਹੈ ਐਰ ਚਿੰਤਾ ਵਰਤ ਧੁੰਦਲਾ ਫੇ ਰਹੀ ਹੈ

ਘਾਰੀ—ਵਾਹ ਕਥਾ ਐਸੀ ਆਤ ਹੈ ਕਿਰਤਾ ਆਪ ਮੁਕਸੇ
ਮਘਤੀ ਰਖਨਾ ਆਫੇ ਹੋਂ ਕਥੇਮੇਂ ਭੁਫ਼ ਫੁਟੀ ਫੁੰ ਆਪਫਾ ਮੇਨੇ
ਰਾਤੇਫੁਐ ਰਾਤ ਫੇਮ ਐਰ ਫੁਫ਼ ਅਜਪਰ ਮੁਫ਼ ਐਰ ਨਫ਼ਫੁਐ
ਮੇਂ ਐ ਫੇਐ ਐ ਪਫੇ ਮਫ਼ਤ ਫੇਘੀ ਫੁੰ ਧੋਫ਼ ਪਫ਼ਤੀ ਰੀ ਆਤ
ਨਹੀਂ ਫੁਐ

ਅਤੀਤ—ਫੁਐ ਫਾਰੀ ਨਮਾਵੁਮ ਤੁਮ ਆਪਨੇ ਫਿਰਮੇ ਫੇਫ਼ ਮੇਂ
ਕਥਾ ਕਥਾ ਅਫ਼ਤ ਮੇਂ ਭਨੇਫ਼ ਸੇ ਫ਼ਾਤੀ ਫਾਰੀ ਮਾਰ ਕਥਾ
ਫੁੰ ਤੁਮ ਮੰਝਮੂਰ ਫਰਤੀ ਫੇਫ਼ ਫੁਫ਼ਾਂ ਧੋਫ਼ ਫ਼ਾਤ ਹੈ

ਮਾਮ ਰਿਕਤ ਚਾਗਨ ਗੋਧਮ ਮੁਰਿਕਤ

ਅਘ ਮੁਫ਼ੇ ਅਫ਼ੇਰ ਫੀ ਫਰਨਾ ਪਫ਼ਾ ਅਤਤ

ਮੁਘਮਿਤਾ ਧੋਫ਼ ਫੁਐ ਫਿ ਰਧ ਫ਼ਰਵਰੀ ਫੇ ਅਮਾਰ ਮੇਂ
ਮੇਨੇ ਫੇਫ਼ਾ

(ਅਪਮਰ ਮੇਝਮਰ ਸੇ ਉਫ਼ਾਫ਼ਰ) ਫੇਫ਼ਿਐਫ਼ਿਨ ਸਫ਼ਮੇਂ ਫੇਫ਼
ਧੋਫ਼ ਫੇਫ਼ਾ ਨਿਫ਼ਫ਼ਰ ਧੋਫ਼ ਫਰਫ਼ਿਨਾ ਤਿਫ਼ਫ਼ਾ ਫੇਫ਼ਾ ਫੇਫ਼ਾ

મિનિસ્ટર ખાલી જાવું. મહારાજ રંગભોરા કદમ્બાના કાગળ ૧૬ સાથે મેલા
મંગા રત્નાન સે ગુમ દેવામાં દેવા.

હરચન્દ તલાશકિયા ચાર માસ સે જતા નહીં જો સાદખ
મિશાન દેં ૫૦) રૂપે નજર કરે.

યેહ પઠકર મેને મુના સિખ સમગ્રા કિમં અપની ખેરિમત
બાલદેન ડો બેજદુ યુતાયે મેને અસત્ર બેહુયા બનકે સિખકિયા
ઝાર અર્જ કાશ ન કરને કી સખત તાકીદ કરી હય મુના-
ચે: હસપર અમત હુવા યેહ પઠાં પર આકર મુઝકાં સહી ન
સાલિમ દેખાયે.

આજ યેહ ખત-(ખત નિકાલ કર) આયા હય તુમ્હારે
બડે બાઈને રહતતકી હાય મેરા બાઈ મુઝપર બડા મહર ખાત
આ મુઝમે જન્મનકુત તુમમે ગણતકુતન અપતક બહિર ન
કિયા અફસોસ અફસોસ રકકર..... ખેર જો કુછકો
અમ કયાં છુપાઈ દેજો. એકખત સે મહુર હુવકે તુમ્હારે
બાલદેન મે તુમકો મુકયા તૌરસે પકોત તલાશ કિયા.

ઝેર તુમ્હારે ગમમે એક માહકે આગે પીઠે રહતત
કરગયે ખેર ખ્યારી અમ સત્ર કરના ચાહિયે બહુજ સખર
કે કયા ચરાહૈ યેહ દિન અમકો નસીમ હોતા હૈ નીચે ખત
મેં વાલિદ સાદખ યેહમી તહરીર ફરમાતે હય અમ બહુજ
તુમ્હારે મેરા ડોન હૈ ઝેર મેરી જાનગીકા કુછ કયામ નહીં

લિહાજ અખ તુમ અપના ધર સલાવો. ઝોર ખા કાયદા નિહાહ કરેકે ઐશસે જીન્દગી ખસર કરો અખકત મેને મશહુર કરકખા હય કે અપતે મામૂલ પાસ દિહલી મેં હય અગર તુમ કહોતો મેં આકર તુમ્કો લેખજી અખ મેં તુમ્હારી મરજીદેખ તાહું કે ક્યાહૈ જવાખ ક્યા લિખું

પ્યારી—હાય વાલિદલી ગુજરગયે ખૈર મેરે વાસ્તે ઉસીકિન ગુજર ચુકયે જીસદિન મેં અલી ગઢકા ખેરવાહ કહકર ઉસ તર્ફ રવાના હુઈ

અખતો મેં હરતરહ તૈય્યારહું આપ જરૂર લિખલી જયે કે આકર લેખવેં ક્યોંકિ ધસ તરહ કલતક ખસર હોગા મગરમહ જરૂર લિખલી જયે કે મેરે અસ્ત હાલસે કિસી કા આગાહ નકરેં

ખત્રીત—યેકતો ઉન્હોંને ખુદહી લિખદિયા હૈ ગરજ કે ખત લિખદિયા ઝોર મુંશી અતાહુસૈન સાહખ તીસરે દિન મય મામાન આ મૈબુદ હુએ ઝોર પ્યા કોતો ઉરસ ખનાકર અજમ અલીગઢકા કિયા પીયારી ખત્રીત કરેકે હસીના નામ રખ્યા ગયા અતાર હુસૈનખી હુખા મિસ્લ ખલીત અકમલકે ખુખ સૂરતી દેખકર ખડોત ખુશ હુએ અલીગઢ આત પહુચે અકલે દરબાર જૈ જૈકે મુખારહ ખાલીકો આરહ થે તમામ ધર મુંશી આતા હુસૈન સાહખ મસ્તૂરાત સે બરાયા ફલહન કી રતુમાઈ હોતી ખતીથી

ખારી ઈસ્લામી લિખાસ પહેને હુએ દર હકીકત ઈસ્મવા મુસ-
મ્મીવનીથી કુછ અસે મેં સાસ ઓર મુસરે કે દિલમેં
હસીનાને અપની ખુશ હકૂમી સે દિલમેં ઘર કરલિયા ઓર
ઓર સખમેં દેહલી વા લી મશહુર હોગઈ

નાબરીન—ઈસ શમાઅ ખરાશી કી માફી માગ કર હમ-
જા સત હોતે હું ફિર મિલેંગે અગર ખુદા લાયા

આજિજ અખ્દુલ શમદ

ચે નોવેલે તમામ હુઈ.

ફરજંદકો પીદરકી નસીહત.

એક શખ્સને અપને બે-વકુફ લડકેકો નસીહત કી, કે
અય ફરજંદ ! જો ઔરત સામને આવે ઉસે નઝરે બહસે ન
કેખના, કોંગે જો ગયેર ઔરત હો, ઓર વોહ વોહ છોટી
હો, તો વોહ બેટીકી ખરાખર હો, ઓર ખરાખર ઉમરકી હો, તો
વોહ બહેન સમજના, ઓર જો બડી હો, વોહ માં હો લડકા
જો અકલમંદ થા ! વોહ ચે મુનકર ચુપ રહા, જખ ખાપને
ઉસકી શાદી કહરાઈ, તો ઉસને કહા, અય પીદર યુઝુર્ગવાર !
આપ ચે ફરમાઈયે, કે મેં શાદી કીસસે કહંગા ! બેટીસે યા
બહેનસે યા માસે !

જુતીયોંકા તુફલ.

લખનકો એક શોહદને એક ઢાં રઈસોંકી હાથવત કી,
જમ લોગ ખાને લગે, તો શોહદને ખજને ખુદ રઈસોંકી
જુતીયાં ઉઠા ઉઠાકર એક કાઠડીમેં રખના શુર કીયા. જમ
લગ લોગ જમા હોગયે, તો જુતે ફેરાંખત કરકે બાઝારસે
દાખવનકા ઈતેઝામ કીયા.

એક રઈસ-મઝી માશા અલીહ ! હુસ્ને ઈતેઝામકી તાઅ-
રીફ નહીં હોસકતી.

દુસરા-મેશક ! તાઅરીફ નહીં હોસકતી, ઝોર દસ્તર
ખાનસે બી બહોત તકલ્લુફ કીયા હે.

ત્રીસરા-ખાનેબી બહોત મઝેદાર હે.

શોહદા-યે સખ હુજુર હીંદી જુતીયોંકી બ-દોલત હે ઝોર
હુજુર-હીંદી જુતીયોંકા સદકા હે !

લોગ જમ રખસત હોને લગે, તો કીસીકા જુતા નથા.
ઈસલીયે અપને મકાનસે મંગવાકર ધર સીધારે.

બે-ન માઝીકે હાથકા ખાના ન ખાના.

મંદ સાહેબોંકા બેકે મુત્ત-તકી પરહેઝગાર થે, ઉનકો સફ-
રકા ઈતેફાક હુવા. અસનાયે રહામેં એક ગાંઉકે નજદીકે સાખ
હુઈ, તો કયામકી ઝુરરત પડી. જમ ગાંઉમેં પહોંચે તો

માયલુમ હુવા, કે યહાં ન કોઈ મરાજીદ હો, ન સરાયે. અબ
હાં બચે ! સખસે બડી ફીકર ચે હુઈ, કે પાસ ખાના મોબુદ
શા. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા પકા હુવા ખાના છુતે તક નહીં
ચે. બહોંત તલાશડે બાદ માયલુમ હુવા, કે ઈસ ગાંડિમેં સીદ્દ
એક બેવા મુસલમાન ઓરત નમાઝી હો. ચે સાહેબ બડી ખુશી-
સે ઉસડે મકાનપર ગયે, ઓર કેહને લગે, કે હમ પરદેસ્તી
મુસફીર હૈ. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા હમ કુછ નહીં ખતે,
આજ તુમ હમારે વાસતે ખાના પકાદો, તો બહાત એકસાન
હોગા. બેવાને મંજુર કીયા, ઓર ખાના ખીત્રાયા, ઓર અપને જુ
ધરમેં ઠેહરનેડા જગા દી. બેવાકો મગરેબકે વક્ત નમાઝ અદા
કરતે દેખા, મગર ઉસકો વુજુ કરને નહીં દેખા. તો ઉનકો
ખ્યાલ હુવા, કે શાયેદ ઈસકો વુજુ અસરકા હોગા. બેવાને
ઇશાકે વક્તથી ખીત્રા—વુજુ નમાઝ અદા કી. તો ઉનકો ખ્યાલ
હુવા, કે ઈસકો વુજુ ખતા નહીં હુવા હોગા. લેકીન જબ ફજ-
રકો ઉઠકર બેવાકો ખીત્રા—વુજુ કીયે નમાઝ અદા કરતે દેખા.
તો ઉનસે રહા નગયા. પુછા કે ઈસકી ક્યા વજેહ હો, કે તુમકો
મગરેબસે અખતક વુજુ સરતે નહીં દેખા. બેવાને જવાબ દીયા,
કે મેરે ખાવીંદોકો મરે હુયે પુરે દસ બરસ હુયુ, જબસે મેરા
વુજુ આજ તક નહીં દુટા ! હઝરતને લા—હોલ પરહકર કહા
કે તેરી નમાઝ ભલી હો, બેવાકો ચે ખાત ખુશી માયલુમ હુઈ.

ઝાર કેહને લગી, કે લા-હોલ અપને ઘર બકર પડે. બે તુ-
મ્હારી એરેઓંકા વુઝુ હુટે ! ઝાર ગાંઉકે નંબર દારસે કેહકર
ઉનકા નીકલવા દીયે, કે યે બદ ચલન હે !

મતલબી અંધા હોતા પે.

એક ઠાકર સાહેબ દો માર ગાંઉકે જમીનદાર થે, ઉનકા
એક ચમારી પર દીવ આગયા, મોકા હુંડતે થે. એક રોજ
ચમારીકા તનહા ઉસકે મકાનમેં આટા પીસતે દેખા, મોકા
અછછા તનહાઈકા હાથ આ ગયા. ચમારીકા હાથ પકડ લીયા
ચમારીને જખ દેખા, કે બેબસીમેં ઈજજત બીગડતી હે, તો
ખંદા—પેશાનીસે ઠાકર સાહેબસે કેહને લગી, કે ઈસ કદર
મોકી તલાશકી ક્યા ખુશરત થી ! ખુઝે સાફ કેહહેતે, મે ખુદ
રજામંદ થી. દેખો આટા વગેરા મેરે હાથેમેં લગા હે. ઉસકા
ધો-ધાકર સાફ કર આઉં, અગર ચકીકા આવાઝ ખંદ હો-
અયેગા, તો ઘરકે લોગોંકા શુખા હો અયેગા, ઈસલીયે તુમ
ચકી પીસો, મેં હાથ મોંહ ધો આતી હું. ઠાકર સાહેબ
ચકી પીસને લગે. ચમારી ઘરમેં ગેઘ, ઝાર અપને બાપસે
મે કીરસા કહા, બાપને લડકીકા રોક લીયા. ઝાર ઠાકર
સાહેબકે બાપસે બકર શીકાયત દીયા, ખેર સુખુતમેં ઉનકે
લડકેકા ચકી પીસના ખતલાયા. જખ ઠાકર સાહેબકે બાપને

આકર વાકઈ ચે હાલ દેખા, તો ઉસ પર બહોત ખશ હુયે, કે રચાયા કયસી તામેદાર રહેગી ? લડકેને જવાબ દીયા. કે અબસી રચાયા તામેદાર નરહે, તો કયા કરું ? આટા પીસ-કર તો ખીસાતા હું !

ન બાસી બચે કુત્તા ખાયે.

એક સાહેબ અપને અજીઝકે મેહમાન થે, બવકતે સુન્દો, મેહમાનને સાહેબે-ખાનાડી ગયેર હાઝરીમેં નોકરોઢા કહા, કે કુછ બાસી ખાના અગર હો, તો લે આઓ, નાશતા કર હું. નોકરને બે-સાખતા જવાબ દીયા, કે કિબલા,ય હાં તો ચે ફસ્તુર હે, કે ન બાસી બચે ન કુત્તા ખાયે. ખિચારે મેહમાનકો બહોત ખીજાવત હુમ, ઝોર ખામોશ રેહ ગયા.

મલેકલ મોતકા ઘોડેમેં ચાના.

એક બુઝુર્ગકે મકાનમેં દો શખ્સ એકહી નામકે આકર મેહમાન રહે. દોનોં બરાબર ચાર પાઈ ચોંપર સોતો થે, દોનોં સાહેબોંકે નામ અબદુશ-શકુર થે. ઇતેફાકસે ઉનમેંસે એક સાહેબ સખ્ત ખીમાર પડે, જખ કે એક દીન ઉનકી હાલત બહોત નાજુક થી. તો દુસરે અબદુશ-શકુર અપની ચાર પાઈ ઉઠાકર ચલદીયે. ઝોર ઉસ જગે સોના ઘોડ દીયા. જખ

किसी दर्याईत डीया म्युं मोलवी साहेब, आपने यहाँ सोना
क्युं छोड दीया ? मोलवी साहेब बोले, पात ये हे, डे मुअ
यकयेक ये प्यास पयदा हुवा, डे हम दानों हमनाम हें, आर
अज दूसरे अजदुश-शकुर करी मुस मर्ग हें, मुमकीन हे, डे
मबेकल मोत घोकमें पजये उनके मेरी इह कज्ज करे !

छपाके छजहार करनेवाले

हुसेन मीरजा पुकसेलर,

करीरोड, पोस्ट नं० १३, मुंभई.

आ पुस्तक अनंतदास रामदासीने छापा, साभतनुं आल
जोरक्षु मुद्रशासकभां छपान्युं.

ઈધરબી તો દેખો

અલેક લેલા હબર દારતાન રૂ. ૪	શાહીદ કરમલા	૦-૧-૦
દારતાન અમીર	સુબોકા રીતારા	૦-૪-૦
હમમ ૨-૮-૦	શાહાદત નામા	૦-૨-૦
દાતમનાઈ ૭ મવાલ પુરે રૂ. ૧	સમાવત નામા	૦-૨-૦
રોજતુરસોદા માને ૧૦ મજલીસ ૧	કીસ્સા ગુલમાનોવર	૦-૫-૦
જગનામા મોહમદ હનીફ રૂ. ૧	ગુલઝરે પંજતન	૦-૩-૦
કિસ્સા મુલમકતવી ૦-૧૦-૦	કી.હાલમા ગલોરીશાહ	૦-૩-૦
કિસ્સા સોતા કહાની ૦-૧૦-૦	નાજની પાન ખાતસરી	૦-૩-૦
કિસ્સા મુસુફ વૃદ્ધેખાં ૦-૧૨-૦	કીસ્સા ચાર હંવેશ	૦-૧૦-૦
આદમહીલ હીસ યાને	હદીસિત મુસલેમીન	૦-૮-૦
ગ્રવાજર હુદી ૦-૧૦-૦	ફુજજતુલ દીસલામ	૦-૨-૦
કિસ્સા ફસાને અબાયમ યાને	વફાતનામા શાહીનામા	૦-૨-૦
અન્નુમનચારા ૦-૧૦-૦	ખુદાદી રહેમત	૦-૨-૦
કિસ્સા મલેક મોહમદ આર	તારા ખુરશીદ	૦-૪-૦
પરીગેતી અફરોજ ૦-૧-૦	કીસ્સા હલીમાદાદ	૦-૨-૦
લેલા મજતુ ખાતસવીર ૦-૪-૦	નોવેલ જવાન બીગી	૦-૧-૦
કિસ્સા તમીમ અન્શાની ૦-૩-૦	મશતવી બેહેરે ઈરફ	
મોલુદ મુલઝરે જન્નત ૦-૪-૦	ખાતસવીર	૦-૮-૦
કિ.જેતુન મોહમદ હનીફ ૦-૩-૦	નોવેલ પિયારીકા આશક	૦-૪-૦

આશંકા બુલબુલ	૦-૨-૦	રત્નબાજકી હરકત	૦-૨-૦
હરીશંક બુલબુલ	૦-૨-૦	આશંકાબાજકી હરકત	૦-૨-૦
નીલાશંક બુલબુલ	૦-૨-૦	આશંકાંકી બેકલી	૦-૨-૦
રત્નબાજ બુલબુલ	૦-૨-૦	ગુનચે કવવાલી	૦-૨-૦
નાગેશ બુલબુલ	૦-૨-૦	કલામે દાગ	૦-૨-૦
ગુલબાજે કવવાલી	૦-૨-૦	કલામે અમીર	૦-૨-૦
ગુલબાજે મદીના	૦-૨-૦	નરકીપૂતલી હુરેઆરખ	૦-૨-૦
કીરકે વતના	૦-૨-૦	ગુલબાજે લટકી નાટક	૦-૨-૦
બેલીના બેબન	૦-૨-૦	ગુલબાજે ગેલેલી	૦-૨-૦
રત્નબાજકી લેકે	૦-૨-૦	આતમી નાગ નાટક	૦-૨-૦
રત્નબાજકી હુલમત	૦-૨-૦	ગુલબાજે આતસવીર	૦-૨-૦

✽ અંતરે દરેકા. ✽

ખરીદારોડા કીતાબે અપાતે વાન અપના પુરા પતા ચાને
નામ-મુકામ-રોડ જાણા હરકતે હે. યા મુજરાતી હોદીમે હે.
યા હોદીમે હરકતે કીખતા અહીં ખત સાફ ન લીખનેમે
હસ ખતકા માલ યા જવાબ નહીં બેજા જતા હે.
આર ૧ રૂ સે કમકા વી. પી. કીસીકા બેજા નહીં જતા.

હરકતમત્રી કીતાબે મોલનેકા પતા:—

હુસેન મીરઝા બુકસેલર,

કરીશંક, પોસ્ટ નં ૧૩, મુબઈ.

